Title: Regarding deletion of Munshi Premchand's novel from the syllabus of 12th Class.

श्री रामजी लाल सुमन (फिरोजाबाद) : अध्यक्ष महोदय, पिछले दस वार्ों से उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की उपेक्षा की जा रही है। उनको हाशिए पर डालने का प्रयास किया जा रहा है। सबसे पहले प्रेमचंद जी को विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम से बाहर किया गया। अब सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि देश के सबसे बड़े शिक्षा बोर्ड, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा से प्रेमचंद के उपन्यास "निर्मला" की जगह समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती मृदुला सिन्हा के उपन्यास "ज्यों मेहंदी के रंग" को लगा दिया गया है। इसको लेकर साहित्यकारों में और हिन्दी साहित्य जगत में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है। श्रीमती मृदुला सिन्हा की साहित्य जगत में कोई खास पहचान नहीं है। प्रेमचंद हमारे सामाजिक संस्कृति के संस्थापकों में से एक हैं। इसी कारण शायद उनको यह कीमत चुकानी पड़ रही है। यदि प्रेमचंद को हटाया गया तो मृदुला सिन्हा उनका विकल्प कदापि नहीं हो सकतीं। प्रेमचंद सामाजिक न्याय के पुरोधा थे। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं, अपितु बंगाल एवं महाराट्र जो और हिन्दी भाषी प्रान्त है में भी उनकी काफी लोकप्रियता है। प्रेमचंद एक और कालजयी उपन्यासकार हैं। कालजयी उपन्यासकार हटाए नहीं जाते। अपनी लेखनी को रेखांकित करने के लिए अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करना किसी भी कीमत पर न्यायसंगत नहीं है। प्रेमचंद के "निर्मला" उपन्यास को हटाए जाने से साहित्य जगत में और साहित्यकारों में काफी प्रतिक्रिया हुई है। यह गम्भीर मामला है। किसी भी कीमत पर मृदुला सिन्हा को प्रेमचंद के समकक्ष नहीं रखा जा सकता। अगर प्रेमचंद को हटाना ही था तो उनके स्थान पर अज्ञेय जैनेन्द्र या रेणु जैसे ही किसी अन्य उपान्यसकार को लगाना चाहिए था। इसलिए यह एक गम्भीर मामला है, सरकार को इस पर रिएक्ट करना चाहिए और इसको वापस लेना चाहिए।

MR. SPEAKER: I allow Shri Prabhunath Singh, Dr. Raghuvansh Prasad Singh, Shri Ravi Prakash Verma, and Shri Ramsagar Rawat to associate themselves with the notice given by Shri Ramji Lal Suman. I now give the floor to Shri Ram Vilas Paswan.

श्री चन्द्रनाथ सिंह (मछलीशहर) : हमें भी इसके साथ एसोसिएट किया जाए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : हम भी इसका समर्थन करते हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैं सी.एन. सिंह जी और रघुवंश प्रसाद जी को भी इसके साथ एसोसिएट करता हूं।

श्री चन्द्रनाथ सिंह : सर, हमारा नाम भी सुमन जी के साथ एसोसिएट किया जाए।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : हम भी सुमन जी के साथ अपने को सम्बद्ध करते हैं।â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आप दोनों का नाम सुमन जी के नाम के साथ एसोसिएट करता हूं, आप बैठ जाइये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अध्यक्ष जी, निर्मला उपन्यास को हटाकर दूसरा लगाना गलत है, इस पर सरकार को वक्तव्य देना चाहिए।â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रेमचंद का उपन्यास हटाने की बात सीरियस है। सरकार इस पर कोई एक्शन ले, ऐसा मैं सरकार को निर्देश देता हूं। आप बैठ जाइये। मैंने सरकार को निर्देश दिया है कि इस विाय में तुरंत कार्रवाई की जरुरत है, सरकार ध्यान देगी।